हिंदी साहित्य में पर्यावरण विमर्श

श्री.श्रीकांत जयसिंग देसाई
पीएच.डी शोधार्थी
देशमुख वाडा,नरसोबा चौक
मु.पो.कामेरी
तहसिल-वालवा जिला-सांगली
मोबाईल नं –9921990072,7972123535
Email-shrikantdesai72@gmial.com

सारांश :

आज तक के दौर साहित्यिक दौर में बहुत से लेखकों ने पर्यावरण इस विषय पर अपने विचार स्पष्ट किए है | कुछ लेखको ने महत्त्व भी स्पष्ट किया है | आज की स्थिति में दिन ब दिन बढते प्रदूषण के कारण पर्यावरण यह विषय बहुत ही महत्वपूर्ण होता जा रहा है ,लेकिन हिंदी साहित्य में पर्यावरण पर बहुत पहले से ही विचार किया गया है | पर्यावरण की व्याख्या से लेकर व्याप्ति तक का स्पष्टीकरण हिंदी साहित्य में दिया गया है | हिंदी साहित्य में पर्यावरण चेतना मानव जीवन एवं पर्यावरण एक दूसरे के पर्याय हैं। जहां मानव का अस्तित्व पर्यावरण से है वहीं मानव द्वारा निरंतर किए जा रहे पर्यावरण के विनाश से हमें भविष्य की चिंता सताने लगी है। हमारे प्राचीन वेदो ऋग्वेद सामवेद यजुर्वेद एवं अथर्ववेद में पर्यावरण के महत्व को दर्शाया गया है।

प्रस्तावना :

"परि" जो हमारे चारों ओर है "आवरण" जो हमें चारों ओर से घेरे हुए है,अर्थात पर्यावरण का शाब्दिक अर्थ होता है चारों ओर से घेरे हुए। पर्यावरण उन सभी भौतिक, रासायनिक एवं जैविक कारकों की समष्टिगत एक इकाई है जो किसी जीवधारी आबादी को प्रभावित करते हैं तथा उनके रूप, जीवन को तय करते हैं। हमारे चारों तरफ का वह प्राकृतिक आवरण जो हमें सरलता पूर्वक जीवन यापन करने में सहायक होता है,पर्यावरण कहलाता है। पर्यावरण से हमें वह हर संसाधन उपलब्ध हो जाते हैं जो किसी सजीव प्राणी को जीने के लिए आवश्यक है। पर्यावरण ने हमें वायु,जल,खाद्य पदार्थ,अनुकूल वातावरण आदि उपहार स्वरूप भेंट दिया है।पर्यावरण की अशुद्धि व पर्यावरण सुरक्षा एवं विमर्श एक ऐसा विषय है जो विज्ञान एवं तकनीकी विकास के साथ गहराई से जुड़ा हैं।संक्षेप में पर्यावरण की शुद्धि या पर्यावरण सुरक्षा विमर्श पर प्राणी जगत का अस्तित्व निर्भर करता है।एक पर्यावरण प्रेमी बड़े पैमाने पर पर्यावरण आंदोलन एक राजनीतिक और नैतिक आंदोलन के रूप में सुधार और पर्यावरण की दृष्टि से हानिकारक मानव गतिविधियों में परिवर्तन के माध्यम से प्राकृतिक पर्यावरण की गुणवत्ता की रक्षा करना चाहता है। एक पर्यावरणवादी पूरी तरह से से पर्यावरण की रक्षा के लिए समर्पित होता है और यही उसका धर्म होता है।

शोध विषय का विश्लेषण :

हिंदी साहित्य में पर्यावरण चेतना मानव जीवन एवं पर्यावरण एक दूसरे के पर्याय हैं।जहां मानव का अस्तित्व पर्यावरण से है वहीं मानव द्वारा निरंतर किए जा रहे पर्यावरण के विनाश से हमें भविष्य की चिंता सताने लगी है। हमारे प्राचीन वेदो ऋग्वेद,सामवेद,यजुर्वेद एवं अथर्ववेद में पर्यावरण के महत्व को दर्शाया गया है।

भारतीय संस्कृति में वेदों, उपनिषदों आदि ग्रन्थों में मनुष्य के स्वस्थ जीवन के लिए पर्यावरण को महत्व दिया गया है। हमारी संस्कृति में प्रकृति हमेशा से पूजनीय रही है। मानव जाति की एकपक्षीय विकास ने प्रकृति को बहुत नुकसान पहुँचाया है।आज हमारे चारों तरफ महामारी फैली हुई है, न साँस लेने के लिए शुद्ध वायु, न पीने के लिए शुद्ध जल मिल पा रहा है, ओजोन होल लगातार फैल रहा है, ग्लेशियर पिघल रहा है, पृथ्वी का तापमान बढ़ रहा है, खाद्य वस्तुएँ विषाणु युक्त हो गई हैं, हमारे लिए पर्यावरण को बचाने की बड़ी जिम्मेदारी आ पड़ी है। पर्यावरण का संकट में आना हमारे अस्तित्व के लिए खतरनाक है। हमने गहरी नींद से जगने में बहुत देर कर दी है। हमने अपने कर्मों से बहुत कुछ बर्बाद कर लिया है और अब जो बचा है, उसके प्रति हम अगर सचेत न हुए तो भावी पीढ़ी के भविष्य को हम अंधकार में ढ़केल के ही दम लेंगे। यही पर्यावरण विमर्श की आधारभूमि है।

इक्कीसवी सदी में जब से वैज्ञानिक प्रगति हुई है तो साथ ही साथ प्राकृतिक संसाधनों का दुरुपयोग भीबढ़ा है। जनसंख्या वृद्धि, जंगलों की कटाई, प्रोद्योगिकी से फैलते प्रदूषण ने समस्त मानव जाति के स्वास्थ्य को संकट में डाल दिया है। ओजोन की पट्टी का ऱ्हास होता जा रहा है | लोगों के सामने त्वचा कैंसर, फसलों की हानि, मोतियाबिन्द बढ़ने जैसे खतरे मंडराने लगे हैं।पर्यावरण के

वातावरण या हवा, स्थलमंडल,या चट्टानें और मिट्टी,जलमंडल,या पानी,और पर्यावरण के जैविक घटक या जीवमंडल यह पर्यावरण के चार बुनियादी घटक हैं।पर्यावरण का सबसे महत्वपूर्ण घटक है वातावरण | प्राकृतिक संतुलन का आधार जंगल है, जंगलों के विनाश के कारण ही कहीं अतिवृष्टि तो कहीं अनावृष्टि देखी जा रही है। भूमंडलीय ताप में वृद्धि का कारण भी जंगलों का नाश होना है। वायु की शुद्धता जंगल पर निर्भर है। किन्तु आज वैज्ञानिक उन्नति एवं जंगल के व्यवसायीकरण ने जंगल का विनाश कर डाला है।

पर्यावरण और मनुष्य का साथ मनुष्य के इस धरती पर अस्तित्व के साथ ही है। मनुष्य ने अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए आरंभ में पर्यावरण को समझने, उसे नियंत्रित करने और अनुकूल बनाने की कोशिश की। फिर भी पर्यावरण के अनसुलझे जटिल रहस्यों के आगे उसे कई बार झुकना होना पड़ा। बड़ी मात्रा में पर्यावरण की शक्तियां मनुष्य के नियंत्रण से बाहर ही रहीं। मनुष्य पर्यावरण की देखी-अनदेखी शक्तियों से डरा और उसे प्रसन्न करने के लिए प्रयास करना शुरू किया। कुछ मात्रा में पर्यावरण को अपने अनुकूल बना लिया जितना कि उसे जीवन जीने के लिए आवश्यक था।

हमारा यह संसार आकाश,वायू,जल,पृथ्वी,अग्नि,पेड,नदी,पहाड,समुद्र,आदि से मिलकर बना है और इन सबका पुरा रूप ही पर्यावरण है | हम सब इसी में जिते है,सांस लेते है | भारतीय साहित्य भी पूरी तरह से पर्यावरण केंद्रित है | पर्यावरण वैदिक काल से चला आ रहा है | पुरातन काल में लोग पर्यावरण की पूजा करते थे | उनके लिए पर्यावरण अपनी माता की तरह था,उसकी रक्षा के लिए अपने सभी कर्तव्यो का पालन करते थे | जिसका वर्णन हजारीप्रसाद द्विवेदी जी के 'कुटज' में भी मिलता है,

"यह धरती मेरी माता है ओर मै इसका पुत्र हुं | इसीलिए मै सदैव इसका सम्मान करता हुं और मेरी धरती माता के प्रति नतमस्तक हुं|"

भारतीय संस्कृति में पर्यावरण का बहुत महत्व रहा है | हिंदी साहित्य में प्रारंभ्भ से ही पर्यावरण के शोषण का विरोध किया गया है | हिंदी साहित्य में पर्यावरण के प्रति प्रेम,संरक्षण,आत्मानुभिति तथा किसी को भी हानि न पहुंचाने का भाव आज भी दिखाई देता है | हिंदी के सभी कवि तथा साहित्यकार जैसे – आचार्य रामचंद्र शुक्ल,आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी, आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी,कबीर,रविदास,गुरुनानक आदि ने पर्यावरण के शोषण के खिलाफ आवाज उठाकर मनुष्यो को पर्यावरण को बचाने के लिए प्रेरित किया |

भक्तिकालीन कवियो में कबीर,रहीम,तुलसी मीराबाई आदि सभी ने पर्यावरण को सुरक्षित रखने के लिए अपने साहित्य के माध्यम से समाज में जागरूकता फैलाई | तुलसीदास द्वारा रचित 'रामचरितमानस'में इस प्रकार के अनेक प्रसंग मिळते है ,जहा राम गंगा नदी की पूजा करते है सीता वृक्षो को सिंचती दिखाई देती है |समुद्र में मार्ग न दिखाई देने पर लक्ष्मण राम से समुद्र रोकने के लिए कहते है,लेकिन राम कहते है की ऐसा करने से समुद्र के सभी जीव जंतू,वनस्पती नष्ट हो जायेगी और पर्यावरण को हानि पहुंचेगी |इस प्रकार अनेक उदाहरण हमें प्राचीन एवं मध्यकालीन हिंदी साहित्य में देखने को मिलते है जो हमें पर्यावरण को बचाने के लिए प्रेरित करते है |

छायावादी कवियो मैथिलीशरण गुप्त,नंददुलारी वाजपेयी,सुमित्रानंदन पंत,सुर्यकांत त्रिपाठी निराला,महादेवी वर्मा,हरीवंशराय बच्चन आदि ने अपने काव्य में प्रकृति एवं पर्यावरण सौंदर्य का चित्रण बडी सुंदरता से किया है | जयशंकर प्रसाद ने अपने प्रसिद्ध महाकाव्य कामायनी ,झरना,लहर,आंसू,कानन कुसुम आदि में पर्यावरण के महत्व को दर्शाते हुए पर्यावरण का सुंदर चित्रण किया है |प्रसाद के महाकाव्य 'कामायनी' में इडा की सुंदर पंक्तियां है,

देखे मैने वे शेल श्रुंग,जो अचल हिमानी से रंजित,
उन्मुक्त,उपेक्षा भरे तुंग अपने जड गौरव के प्रतिक'
इन पंक्तियो में मानव जीवन की निराशा एवं पर्यावरण के महत्व को दर्शाया है |

भारतीय संस्कृति को अगर वन संस्कृति कहा जाए तो गलत ना होगा हिंदी साहित्य मे वन को विशेष स्थान प्राप्त है,इतना ही नही विश्व की प्रथम कविता और प्रथम महाकाव्य तैयार हुआ था | लेकिन मनुष्य आज अपने स्वार्थ के लिए संस्कृति को नष्ट करने का काम कर रहा है |

सुमित्रानंदन पंत जी की पर्वत प्रदेश मे पावस कविता मे हमको प्रकृति का अद्भुत नजारा देखने को मिलता है।

'पावस ऋतु थी,पर्वत प्रदेश
पल पल परिवर्तित प्रकृती वेश
मेखलाकार पर्वत अपार
अपने सहस्त्र दृग सूमन फाड,
अवलोक रहा है बार-बार

नीचे जल मे निज महाकार

इस कविता में प्रकृति के नजारे का वर्णन किया गया है|

नरेश अग्रवाल जिने अपने कविता के माध्यम से पेडों को अंतिम संस्कार की संज्ञा दी है-

"मै गुजर रहा था
अपने चीर परिचित मैदान से
एका एक चीख सुनी
जो मेरे प्रिय पेड की थी
कुछ लोग खडे थे बडी बडी कुल्हाडिया लेकर
वे काट चुक थे इसके हाथ
अब पाव भी काटने लगे थे

इन पंक्तियों में मनुष्यधारा वृक्षों को नष्ट के जाने का वर्णन किया गया है|

छायावाद के और एक कवि अज्ञेय जी के काव्य में भी मानव और पर्यावरण के संबंधो की झलक मिलती है उन्होने अपनी कविता असाध्य वीणा में मनुष्य को अहंकार त्याग देने की तथा आत्मानुभूति प्राप्त करने की प्रेरणा दी है |

निष्कर्ष :-

हिंदी साहित्य मे पर्यावरण के विभिन्न अंगों का सौंदर्य चित्रण और मनुष्य से लेकर पर्यावरण प्रदूषण और महत्वपूर्ण समस्याओ पर विचार किया गया है| विचार करने साथ साथ ही उन समस्याओ समाधान भी प्रस्तुत किया गया है| हिंदी साहित्य ने मानव को पर्यावरण के साथ जोडकर रखा है क्योंकि वह जानता है कि मनुष्य का संपूर्ण अस्तित्व ही पर्यावरण से जुडा है और मनुष्य अपनी सभी आवश्यकताओ के लिए पर्यावरण पर ही निर्भर है,इसलिए उसे नष्ट कर वह खुद भी सुरक्षित नही रह सकता| साहित्य मनुष्य को पर्यावरण के साथ लगाव करने के लिए प्रवृत्त करने का काम भी करता है|

अत: हिंदी साहित्यिकी भूमिका मनुष्य और पर्यावरण मे बहुत ही महत्त्वपूर्ण है यही वास्तव है |

संदर्भ ग्रंथ :-

1.'कामायनी',श्रध्दा सर्ग,जयशंकर प्रसाद,प्रथम संस्करण 1995
2. .'कामायनी',जयशंकर प्रसाद,प्रथम संस्करण 1995
3. .'कामायनी',जयशंकर प्रसाद,प्रथम संस्करण 1995
4. 'रामचरितमानस' किष्किंधाकांड श्लोक 11